Toppersnotes
Unleash the topper in you

UGC-NET
इतिहास

National Testing Agency (NTA)

पेपर 2 || भाग – 2

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	मध्यकालीन इतिहास	
1.	**पूर्व मध्यकाल - 800 ई० - 1200 ई०**	1
	➢ दक्षिण भारत के राज्य	1
	✓ बादामी (वातापी) के चालुक्य	1
	✓ कल्याणी के चालुक्य (Chalukyas of Kalyani)	4
	➢ प्रमुख शासक (Prominent Rulers)	4
	✓ वेंगी के चालुक्य (Chalukyas of Vengi)	5
	➢ चालुक्यकालीन संस्कृति (Chalukyan Culture)	5
	➢ पल्लव राजवंश (Pallava Dynasty)	8
	➢ चोल साम्राज्य	13
	➢ राष्ट्रकूट राजवंश (753–983 ई.)	21
	➢ राजपूत राजवंश	26
2.	**सूफी, भक्ति, सिक्ख आन्दोलन, दिल्ली सल्तनत**	37
	➢ सूफी आन्दोलन	37
	➢ सूफी सिलसिले एवं प्रमुख संत	39
	➢ भक्ति आन्दोलन	45
	➢ सिक्ख धर्म/आन्दोलन	54
	➢ भारत पर अरब आक्रमण	57
	➢ भारत पर तुर्कों के आक्रमण	58
	➢ दिल्ली सल्तनत (1206 – 1526 ई.)	62
	➢ गुलाम वंश (मामलूक वंश) 1206 – 1290 ई.	63
	➢ खिलजी वंश (1290 ई.–1320 ई.)	73
	➢ तुगलक वंश (1320–1414 ई.) – (94 वर्ष तक)	83
3.	**तुगलक वंश, मुग़ल साम्राज्य**	88
	➢ मुहम्मद बिन तुगलक की योजनाओं की जानकारी/स्थिति	88
	➢ फिरोजशाह तुगलक (1351–1388 ई.) – 37 वर्ष	89
	➢ नासिरुद्दीन महमूद (1394 ई.–1412 ई.)	93
	➢ सैय्यद वंश (1414–1451 ई.) — (37 वर्ष)	94
	➢ लोदी वंश (1451–1526 ई.) — (75 वर्ष)	95
	➢ बहमनी साम्राज्य	115
	➢ मुगल साम्राज्य (1526 – 1707 ई.)	118
	✓ बाबर (1526 – 1530 ई.)	118
	✓ हुमायूँ 1530-1556 ई. (नासिरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ)	122
	✓ अकबर (1542–1605)	130

4.	**मुगल कला संस्कृति**	141
	➢ अकबर	141
	➢ जहाँगीर (1605 से 1627 ई.)	143
	➢ शाहजहां	147
	➢ औरंगज़ेब	152
	➢ मुगल प्रशासन	157
	➢ मुगलकाल में मुद्रा प्रणाली	168
	➢ मुगलकालीन चित्रकला	169
	➢ मध्यकालीन भारत की प्रमुख तिथियाँ	171
5.	**पुनर्जागरण**	176
	➢ पुनर्जागरण का अर्थ	176
	➢ धर्म सुधार (Reformation)	181
	➢ अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम	187
	➢ फ्रांस की क्रांति (1789)	192
	➢ औद्योगिक क्रांति	199
	➢ एशिया एवं अफ्रीका में उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद	202
	➢ इंडोनेशिया में उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद	211
	➢ मलेशिया में उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद	212
	➢ प्रथम विश्व युद्ध	213
	➢ द्वितीय विश्व युद्ध (सितंबर 1939 से अगस्त 1945 तक)	225
6.	**ग्रंथ**	230
	➢ ब्राह्मणेतर ग्रंथ	230
7.	**अभ्यास प्रश्न**	236

1 CHAPTER पूर्व मध्यकाल - 800 ई० - 1200 ई०

दक्षिण भारत के राज्य

1. चालुक्य राज्य

दक्षिणपथ में चालुक्यों की 3 तीन प्रमुख शाखाएँ थीं -

1. बादामी (बतापी) का चालुक्य वंश (550−750 ई.)
2. कल्याणी के उत्तरकालीन पश्चिमी चालुक्य (950−1100 ई.)
3. वेंगी (आंध्र) के पूर्वी चालुक्य (600−1200 ई.)

- राष्ट्रकूटों ने बादामी के चालुक्य वंश को नष्ट किया था।
- राष्ट्रकूटों के पतन के बाद चालुक्यों की दुसरी शाखा कल्याणी के चालुक्यों का उदय हुआ।
- नीलकंठ शास्त्री के अनुसार इस राजवंश का मूल नाम चालुक्य था।

बादामी (वातापी) के चालुक्य

- महाकूट अभिलेख में इस वंश के प्रारंभिक शासकों का नाम जयसिंह व रणराग मिलता है।
- ये आरंभ में कदम्बों के सामंत थे।
- इस वंश का वास्तविक संस्थापक पुलकेशिन था।
- महाकूट का लेख बीजापुर जिले में स्थित है। इस लेख की तिथि ई है।
- बादामी अभिलेख में इस वंश को हारीती पुत्र तथा मानव गोत्रीय कहा है।

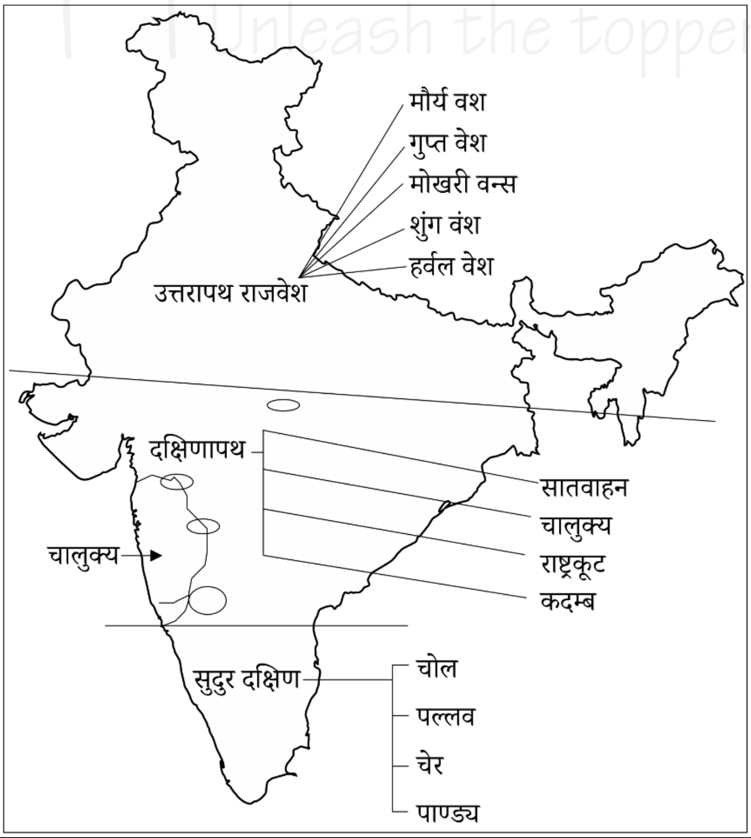

प्रमुख शासक:

पुलकेशिन् I (543–567 ई.)

- यह इस वंश का वास्तविक संस्थापक था।
- वातापी (बादामी) इस राजवंश की राजधानी थी।
- इसने राज्य में अश्वमेध यज्ञ करवाया।
- पुलकेशिन् रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, पुराण का ज्ञाता था।
- महाकूट अभिलेख में पुलकेशिन् प्रथम की तुलना विष्णु से की गई है।
- इसकी उपाधियां - पृथ्वीवल्लभ, महाराज की उपाधि धारण की।

पुलकेशिन् I के पुत्र थे -

1. कीर्तिवर्मन (567–598 ई.)
2. मंगलेश (598–609 ई.)

- कीर्तिवर्मन को महाकूट अभिलेख में वातापी का प्रथम निर्माता कहा है।
- कीर्तिवर्मन नल, मौर्यों व कदम्बों के लिये कालरात्री के समान था।
- ऐहोल प्रशस्ति के अनुसार कीर्तिवर्मन ने कदम्ब वृक्ष को कदम्ब वृक्ष की तरह उखाड़ फेंका।
- मंगलेश के नेरुर दानपात्र तथा महाकूट स्तंभलेख से पता चलता है कि इसने कलचुरि शासक बुद्धराज पर आक्रमण किया।
- मंगलेश ने बादामी के गुप्त मंदिर का निर्माण करवाया।

पुलकेशिन् द्वितीय : 609–642 ई.

- यह इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था।
- ऐहोल अभिलेख में कहा गया है कि, "जब पुलकेशिन् ने मंगलेश का वध भंग किया, तब संसार अखिल के अंधकार से ढक गया।"
- पुलकेशिन् II का प्रथम अभियान कदम्ब राज्य के खिलाफ था।
- इस समय कदम्ब राजा कीर्तिवर्मा था। पुलकेशिन् II ने कदम्ब की राजधानी वैजयंती पर अधिकार कर लिया।
- कदम्ब विजय के बाद गंग व आलुप क्षेत्रों को जीता।
- ऐहोल अभिलेख के अनुसार, "उसने आलुपों तथा गंगों को अपनी आसन सेवा का भत्सुत्थान कराया था।"
- इस समय आलुप शासक कुन्दवर्मन् था। गंग वंश का शासन दुर्विनीत था।
- अल्लुप तथा गंगों को जीतने के बाद पुलकेशिन ने कोंकण प्रदेश पर चढ़ाई किया। यहीं पर मौर्यों को पराजित किया।
- इस विजय के बाद मौर्यों की राजधानी पुरी (धारापुरी), जिसे पश्चिमी समुद्र की लक्ष्मी कहा जाता है, पर सैकड़ों नौकाओं के साथ आक्रमण किया।
- ऐहोल अभिलेख के अनुसार पुलकेशिन II ने नर्मदा (रेवा) नदी के तट पर हर्षवर्धन को पराजित किया।

पुलकेशिन II का पूर्वी भारत अभियान -

- इस अभियान के अंतर्गत उसने कलिंग व कोशल को जीता।
- इस अभियान में मारे गए सैनिकों के खून से यहाँ की झीलें लाल हो गई थी - यह ऐहोल अभिलेख में लिखा हुआ है।
- पुलकेशिन II का अंतिम अभियान पल्लवों के विरुद्ध था। यह दो-चरणों में हुआ –
- पुलकेशिन II का प्रथम पल्लव अभियान 630 ई. में महेन्द्रवर्मन के विरुद्ध था। इसमें पुलकेशिन II ने महेन्द्रवर्मन को पराजित किया।

- तब पल्लवों के उत्तरी भाग पर पुलकेशिन II ने अधिकार कर अपने भाई विष्णु वर्धन को शासक बना दिया। यह आज वेंगी कहलाता था।
- यहीं से वेंगी की चालुक्य शाखा की शुरुआत हुई।
- पुलकेशिन II का दूसरा पल्लव अभियान नरसिंहवर्मन I के खिलाफ था।
- इस अभियान में नरसिंहवर्मन I ने पुलकेशिन II को हराया।
- नरसिंहवर्मन ने वातापी पर अधिकार किया तथा वातापीकोंड की उपाधि धारण की।
- पुलकेशिन II ने फारस के शासक खुसरो II के दरबार में अपना दूत भेजा।
- अजन्ता की गुफा संख्या 16 में पुलकेशिन II को ईरानी राजदूत (फारसी शाह खुसरो द्वितीय) व उसकी पत्नी शीरी का स्वागत करते दिखाया गया है।
- लोहनारा अभिलेख के अनुसार पुलकेशिन II ने परमभागवत की उपाधि धारण की।
- पुलकेशिन II के बाद विक्रमादित्य प्रथम शासक बना (655–681)।
- इसने पल्लव शासक नरसिंहवर्मन प्रथम को हराया तथा वातापी पर पुनः चालुक्यों का अधिकार स्थापित किया।
- विक्रमादित्य प्रथम ने चोल, चेर व पाण्ड्यों को हराया; जिसके कारण इन्हें तीनों समुद्रों का स्वामी कहा गया है।
- विक्रमादित्य प्रथम ने अपने भाई जयसिंहवर्मन को लाट प्रदेश (गुजरात) का गवर्नर बनाया। बाद में यहाँ चालुक्यों की लाट शाखा स्थापित हुई।
- विक्रमादित्य प्रथम के बाद उसका पुत्र विनयादित्य (681–696) शासक बना।

विजयादित्य (696–733 ई.):

- इसने समस्तभुवनाश्रय की उपाधि धारण की।
- इसने गंगा, यमुना की मूर्तियों/पंचमहाशब्द अपने पिता को भेंट किया।
- इसने पट्टकल के विशाल शिव मंदिर का निर्माण करवाया।

विक्रमादित्य II (733–744):

- इसने पल्लव शासक नन्दिवर्मन II को हराया और बाद में कांचीकोंड की उपाधि धारण की।
- इसके शासन के प्रथम वर्ष में **अरबों** ने **दक्षिण** पर आक्रमण किया।
- अरबों को पराजित करने के बाद ही इसने **अवनिजय** की उपाधि धारण की।
- इस आक्रमण की जानकारी **नवसारी दान पात्र (लाट प्रदेश)** से मिलती है।
- इसने **कालचुरी** के **हैहय वंश** की दो राजकुमारियों से विवाह किया:
    1. **लोक महादेवी**
    2. **त्रैलोक्य देवी**
- दोनों रानियों ने मंदिरों का निर्माण करवाया:
    - ✓ **लोक महादेवी** ने **विरुपाक्ष मंदिर (पट्टकल)** बनवाया।
    - ✓ **त्रैलोक्य देवी** ने **त्रैलोक्यमहादेव मंदिर** बनवाया।

कीर्तिवर्मन द्वितीय: 745–757

- यह इस वंश का अंतिम शासक था (बादामी चालुक्य)।
- राष्ट्रकूट दंतिदुर्ग ने कीर्तिवर्मन II को पराजित करके वातापी चालुक्य शाखा को समाप्त कर दिया।
- वातापी के क्षेत्र में दंतिदुर्ग ने राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की।

- राष्ट्रकूटों ने अपनी राजधानी मान्यखेत को बनाया।
- राष्ट्रकूटों के 200 वर्षों के लगभग शासन करने के बाद चालुक्य तैलप II ने इस स्थान से राष्ट्रकूट वंश को समाप्त कर दिया।
- तैलप II ने इसी स्थान पर पुनः चालुक्य वंश की स्थापना की।
- तैलप II ने अपनी राजधानी कल्याणी को बनाया।
- चालुक्यों की यह शाखा कल्याणी के पश्चिमी चालुक्य कहलाई।

कल्याणी के चालुक्य (Chalukyas of Kalyani)

- राष्ट्रकूटों के पतन के बाद कल्याणी के चालुक्यों का उदय हुआ।
- बादामी के चालुक्य तथा कल्याणी के चालुक्यों के मध्य राष्ट्रकूटों का शासन था।
- कल्याणी के चालुक्यों का संस्थापक तैलप II था (973–997 ई.)।
- विक्रमांकदेवचरित नामक ग्रंथ से कल्याणी के चालुक्यों की जानकारी मिलती है।
- इस ग्रंथ के लेखक बिल्हण थे, जो चालुक्य शासक विक्रमादित्य VI के दरबारी थे।
- विक्रमादित्य VI के दरबारी विज्ञानेश्वर ने मिताक्षरा नामक ग्रंथ लिखा।
- इस ग्रंथ से भी कल्याणी के चालुक्यों की जानकारी मिलती है।
- विक्रमादित्य VI के कैथोल लेख में कहा गया है कि 59 चालुक्य राजाओं ने अयोध्या में राज्य किया, फिर वहाँ से दक्षिण चले गए।

प्रमुख शासक (Prominent Rulers)

तैलप II (973–997 ई.):

- इसने 973 ई. में राष्ट्रकूट शासक कर्क II को गद्दी से हटाकर अपने को कल्याणी का स्वतंत्र शासक घोषित किया।
- इसी ने राष्ट्रकूटों को पराजित करके कल्याणी के चालुक्य वंश की स्थापना की।
- इसने अपनी राजधानी कल्याणी को बनाया। मान्यखेत
- इसने मालवा के परमार शासक मुंज को पराजित किया तथा यातनाएँ देकर मार डाला।
- इस अभियान की जानकारी मेरुतुंग की प्रबंध चिंतामणि से होती है।
- 980 ई. में चोल शासक उत्तम चोल को पराजित किया।
- तैलप II की मृत्यु के बाद सत्याश्रय शासक (997–1008) बना।
- सत्याश्रय ने अलंकवत्सल की उपाधि धारण की।
- इसे सालिम / सतिग भी कहा जाता है।
- 1006 ई. में सत्याश्रय ने वेंगी पर अधिकार किया तथा इसके गुन्टूर जिले पर अधिकार जमा लिया।
- सत्याश्रय के बाद कुछ समय तक विक्रमादित्य पंचम शासक बना।
- विक्रमादित्य के बाद जयसिंह II तथा जयसिंह II का उत्तराधिकारी सोमेश्वर प्रथम बना।
- सोमेश्वर प्रथम ने अपनी राजधानी मान्यखेत से कल्याणी को हटाया।
- सोमेश्वर प्रथम ने चोलों से हारने के बाद आत्महत्या कर ली थी।
- सोमेश्वर प्रथम का उत्तराधिकारी सोमेश्वर द्वितीय हुआ।
- सोमेश्वर द्वितीय का उत्तराधिकारी विक्रमादित्य VI था।

विक्रमादित्य VI (1076–1126 ई.)

- कल्याणी के चालुक्यों का महान शासक था।
- उपाधि: त्रिभुवन मल्ल
- राज्याभिषेक: 11 फरवरी 1076 ई.
- राज्याभिषेक के अवसर पर इसने "चालुक्य विक्रम संवत" आरंभ किया था।
- इसके प्रमुख दरबारी विद्वान - बिल्हण तथा विज्ञानेश्वर थे।
- 1100 ई. को होयसल वंश के शासकों को पराजित किया।
- श्रीलंका के शासक विजयबाहु के दरबार में इसने 1083 ई. में एक दूत मंडल भेजा।
- इसने नर्मदा नदी के तट पर तुलापुरुषदान यज्ञ किया।
- बिल्हण को इसने विद्यापति की उपाधि प्रदान की।
- इसने अपनी रानियों को शासन में बड़े पद दिए थे।
- विक्रमादित्य VI का उत्तराधिकारी इसका पुत्र सोमेश्वर तृतीय हुआ।
- सोमेश्वर तृतीय ने मानसोल्लास नामक ग्रंथ की रचना की (शिल्पशास्त्र)।
- सोमेश्वर III ने विक्रमांक अभ्युदय नामक पुस्तक भी लिखी थी।
- इसने त्रिभुवन, सर्वज्ञ-चक्रवर्ती, सर्वज्ञ-भूप, भूपनकमल आदि की उपाधि धारण की।
- इसके बाद तैलप III इस वंश का अगला शासक बना।
- तैलप III के समय इसके क्षेत्रों पर कालचुकी शासकों का आधिपत्य शुरू होने लगा।
- इस वंश का अंतिम शासक सोमेश्वर चतुर्थ था।
- इसके बाद चालुक्य क्षेत्र के उत्तर में देवगिरी के यादवों तथा दक्षिण में होयसल वंश का अधिकार शुरू हुआ।

वेंगी के चालुक्य (Chalukyas of Vengi)

- इनका शासन दक्षिणापथ के पूर्व में स्थापित था।
- इनकी राजधानी वेंगी थी। (आंध्रप्रदेश में कृष्णा व गोदावरी के मध्य)।
- इस वंश का संस्थापक विष्णुवर्धन था (615–630)।
- इसने विषमसिद्धि की उपाधि धारण की।
- इसके उत्तराधिकारी जयसिंह प्रथम, विष्णु II, विजयादित्य II-भीम, विजयादित्य IV, अम्म I, दानार्णव, चाउनीज, विजयादित्य VII प्रमुख शासक हुए।
- कालान्तर में वेंगी के चालुक्यों का चोल साम्राज्य में विलय हुआ।

चालुक्यकालीन संस्कृति (Chalukyan Culture)

चालुक्य प्रशासन (Chalukyan Administration)

- चालुक्यों राजवंश में साकेलासी उर्फ सामंत कद
- चालुक्यों का राजचिन्ह मयूरध्वज था।
- इनका राजमुद्रा का चिन्ह वराह था। चालुक्यों का प्रतीक - वराह था।
- सम्राट सर्वोपरी होता था। सम्राट का राज्याभिषेक पट्टड़कल के महावीर सिंहासन पर होता था।

- बड़े नगरों में तीन बड़ी-बड़ी सभाएँ होती थीं, जिसमें प्रत्येक को महाजन कहा जाता था।
  1. ब्राह्मण सभा
  2. श्रेणियों की सभा
  3. सामान्य सभा
- चालुक्य लेखों में ग्राम के अधिकारी को गामुंड कहा जाकर गया है।
- ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।
- गामुंड की नियुक्ति केंद्र द्वारा होती थी।
- नगरों की दो श्रेणियाँ थीं:
  1. सामान्य नगर तथा
  2. बंदरगाह नगर
- सामान्य नगरों को **पूर/कारम** कहा जाता था। **कार** का मुख्य प्रशासक **नगर आदि** कहलाता था।
- **बन्दरगाह नगर** को **पट्टनम्** कहा जाता था।
- **बन्दरगाह** का प्रमुख अधिकारी **पट्टनस्वामी** कहा जाता था।

चालुक्य कला व स्थापत्य (Chalukyan Art and Architecture)

- **चालुक्य कला** के नमूने **बादामी, ऐहोल, पट्टडकल** तथा **कार** से मिले हैं।
- इस कला में **वेसर शैली** का समुचित उपयोग हुआ है।

1. बादामी के स्मारक: (बादामी वर्तमान में कर्नाटक में स्थित है)

- ✓ बादामी में **पाषाण को काटकर चार स्तम्भयुक्त मण्डप** बनाये गये हैं।
- ✓ यह चालुक्यों का **राजधानी क्षेत्र** था।
- ✓ यहाँ से **गुफा मंदिर** ज्ञात हुए जो कि **दक्षिण भारत के प्राचीनतम** हैं।
- ✓ इनका निर्माण लाल बलुआ पत्थर को काटकर किया गया है।
- ✓ इन गुफाओं की खोज स्टेला क्रैमरिश द्वारा की गई।
- ✓ इनमें प्रथम शैव, दूसरी व तीसरी वैष्णव तथा चौथी जैन धर्म से सम्बंधित है।

गुफा संख्या-1

- ✓ यह भगवान शिव को समर्पित है।
- ✓ इसमें नटराज की मूर्ति है। (यह प्राचीनतम नटराज की मूर्ति है)।
- ✓ यहाँ 16 भुजाओं में नटराज की प्रतिमा मिली है।

गुफा संख्या-2

- ✓ यहाँ से अष्टभुजी विष्णु (विक्रम) की मूर्ति मिली।
- ✓ यहाँ से देवासुर संग्राम का विवरण मिलता है।

2. ऐहोल (Aihole) - कर्नाटक

- ✓ **ऐहोल** को **मंदिरों का नगर** कहा जाता है।
- ✓ यहाँ से लगभग **मंदिरों के अवशेष** प्राप्त हुए हैं।
- ✓ **दक्षिण भारत में मंदिर स्थापत्य का उद्भव ऐहोल** से माना जाता है।
- ✓ मंदिर निर्माण में **नागर** व **द्रविड़ शैली** का प्रयोग हुआ है।

प्रमुख मंदिर (Prominent Temples)

1. दुर्गा का मंदिर (दुर्ग मंदिर) (Durga Temple)

- ✓ इसमें दुर्गा की प्रतिमा नहीं रही गई है।
- ✓ इसका आकार गजपृष्ठीय है। जो बौद्धकालीन की विशेषता है।
- ✓ इसे सूर्य मंदिर भी माना गया है।

2. मेगुति जैन मंदिर (ऐहोल) (Meguti Jain Temple)

- ✓ इसका निर्माण 634 ई. में कीर्तिवर्मन II ने करवाया।
- ✓ यह गुप्तकालीन मंदिर निर्माण कला का अंतिम मंदिर है।
- ✓ ऐहोल प्रशस्ति इसी मंदिर की दीवार पर है।

3. लाड खाँ मंदिर (ऐहोल) (Lad Khan Temple)

- ✓ यह शिखर विहीन मंदिर है।
- ✓ इसमें मुस्लिम संत रहते थे।
- ✓ अन्य मंदिर (Other Temples)-हुच्चीमल्ली गुडी मंदिर, उन्तीगुडी मंदिर।

3. पट्टडकल (Pattadakal)

- ➢ यहाँ से **चालुक्य काल के मंदिर** प्राप्त हुए हैं।
- ➢ जिनमें से **द्रविड़ शैली** तथा **नागर शैली** में हैं।
- ➢ **द्रविड़ शैली के मंदिर (Dravida Style Temples)**
  1. विरुपाक्ष
  2. संगमेश्वर
  3. गलगानाथ
  4. सुमेश्वर
  5. जैन मंदिर
  6. मल्लिकार्जुन
- ➢ **नागर शैली के मंदिर (Nagara Style Temples)**
  1. पापनाथ
  2. जम्बु
  3. लिंग
  4. कर सिद्धेश्वर

प्रमुख मंदिर (Prominent Temples)

1. विरूपाक्ष मन्दिर (Virupaksha Temple)

- ✓ इसका निर्माण **विक्रमादित्य** की रानी **लोक महादेवी** ने करवाया।
- ✓ इसे **लोकेश्वर मन्दिर** भी कहा जाता है।
- ✓ इस मन्दिर का **वास्तुकार गण्ड** था (**उपाधि-त्रिभुवनाचार्य**)।
- ✓ इस मन्दिर की दीवारों पर **रामायण के दृश्यों का अंकन** है।
- ✓ इसके परिसर में **लघु मन्दिर** हैं।
- ✓ **चालुक्य काल में सर्वप्रथम गोपुरम्** का प्रयोग इसी मन्दिर में हुआ है।

2. **पापनाथ मन्दिर (पट्टडकल) (Papanatha Temple)**
   - ✓ यहाँ से **कन्नड़ भाषा का लेख** मिला है।
   - ✓ इसके **शिल्पकार देवार्थ तथा बलदेव** था।

<u>पल्लव राजवंश (Pallava Dynasty)</u>

- ➢ चालुक्यों के दक्षिण में पल्लव राजवंश स्थापित हुआ था।
- ➢ पल्लव राजवंश का उदय संगम काल के अवसान के बाद उसके ध्वंसावशेषों पर हुआ।
- ➢ पल्लव राजवंश पेन्नार व वेवई नदी के मध्य विकसित हुआ। यह क्षेत्र तोण्डमण्डलम् कहलाता था।
- ➢ इनकी राजधानी कांचीपुरम् थी।

- ➢ वी. स्मिथ व मुदलियार ने पल्लवों को श्रीलंका की एक जनजाति माना है।
- ➢ के.पी. जायसवाल, आर. गोपालन, नीलकंठ शास्त्री ने पल्लवों का ईरानी मूल का माना है।
- ➢ पल्लव राजवंश का प्रतीक सिंह था।
- ➢ पल्लव शासकों ने स्वयं को अश्वत्थामा का वंशज माना है।
- ➢ पल्लवों को संगम साहित्य में तोण्डियर कहा गया है।
- ➢ पल्लवों की राजकीय भाषा संस्कृत थी।

पल्लव शासक (Pallava Rulers):

1. **सिंहवर्मा (Simhavarman) (शासनकाल = 250–300)**
   - ✓ यह पल्लव वंश का संस्थापक माना जाता है।
2. **शिवस्कन्दवर्मा (Sivaskandavarman)**
   - ✓ यह पल्लव वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था।
   - ✓ इसने पल्लवों की राजधानी कांचीपुरम् को बनाया।
   - ✓ उपाधि: धर्ममहाराज
   - ✓ पल्लव वंश का शासक विष्णुगोप तीसरा शासक हुआ।
   - ✓ विष्णुगोप के समकालीन गुप्त शासक समुद्रगुप्त था।

पल्लवों का राजनैतिक इतिहास (परवर्ती शासक - Later Rulers)

1. सिंह विष्णु (Simhavishnu) (575–600 ई.)

- ✓ यह पल्लवों के राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- ✓ इसने अवनीसिंह की उपाधि धारण की।
- ✓ इसके दरबारी विद्वान - महाकवि भारवि थे।
- ✓ महाकवि भारवि ने संस्कृत भाषा में किरातार्जुनीयम् की रचना की।
- ✓ इसने मामल्लपुरम् में वराह मंदिर का निर्माण करवाया। इसमें पत्नी तथा पुत्र की मूर्ति स्थापित करवाई।

2. महेन्द्रवर्मन (600–630 ई.)

- ✓ यह सिंह विष्णु का पुत्र था।
- ✓ इसके काल में पहली बार पल्लव-चालुक्य के संघर्ष आरंभ हुआ था।
- ✓ इसके समय चालुक्य शासक पुलकेशिन II था।
- ✓ पुलकेशिन II ने इसको पराजित किया था।
- ✓ अप्पार नयनार संत इसके काल में थे।
- ✓ इसने मत्तविलास, विचित्रचित्त, परमेश्वर आदि उपाधियाँ धारण की थीं।
- ✓ इसने मत्तविलास प्रहसन नामक लेख की रचना की।
- ✓ इस ग्रंथ में कापालिकों एवं बौद्ध भिक्षुओं पर व्यंग्य किया गया है।
- ✓ इसके दरबार में संगीतज्ञ रुद्राचार्य रहते थे।
- ✓ महेन्द्रवर्मन ने संगीत ग्रंथ कुडिमियामलै तथा पुडुक्कोट्टई की रचना की।

3. नरसिंह वर्मन I (630–668 ई.)

- ✓ यह पल्लव वंश का सर्वाधिक प्रतापी शासक था।
- ✓ इसे 642 ई. में पुलकेशिन II को पराजित किया तथा उसे मार डाला।
- ✓ इसने वातापीकोंड की उपाधि धारण की।
- ✓ इसने श्रीलंका के मान्वर्मन को राजगद्दी प्राप्त करने में सहायता के लिए सेना भेजी। (जानकारी का स्रोत- काशक्कुड़ी ताम्रपत्र)।
- ✓ इस काशक्कुड़ी ताम्रपत्र में इसकी तुलना भगवान श्री राम से की गई है।
- ✓ इसके शासन काल में चीनी यात्री ह्वेनसांग कांची पहुँचा (641 ई.)।
- ✓ इसने महाबलीपुरम् की स्थापना की थी।
- ✓ चालुक्य शासक विक्रमादित्य प्रथम के आक्रमण में नरसिंहवर्मन I मरा गया।
- ✓ इसकी मृत्यु के बाद महेन्द्रवर्मन II (668–70) शासक बना।

4. परमेश्वरवर्मन (670–700 ई.)

- ✓ यह चालुक्य शासक विक्रमादित्य I से पराजित हुआ था।
- ✓ तथा कांची पर चालुक्यों का अधिकार हो गया था।
- ✓ इसने मामल्लपुरम् में गणेश मन्दिर का निर्माण करवाया।
- ✓ इसने विद्याविनीत की उपाधि धारण की।

5. नरसिंहवर्मन II (700–728 ई.)

- ✓ इसके समय चालुक्य-पल्लव संघर्ष चला रहा।
- ✓ इसके काल में कला व संस्कृति में विकास हुआ।
- ✓ इसने शंकरभक्त, राजसिंह, आगमप्रिय आदि उपाधियाँ धारण कीं।

- ✓ इसने राजसिंह शैली के मन्दिरों का निर्माण करवाया।
- ✓ इसने कांची के कैलाशनाथ मन्दिर का निर्माण करवाया।
- ✓ पदलालित्य के प्रसिद्ध आचार्य दाण्डिन् इसके दरबारी थे।
- ✓ दाण्डिन के प्रमुख ग्रन्थ :- दशकुमारचरित, अवन्तिसुन्दरी, काव्यादर्श।
- ✓ कवि भास छठी के काल में थे।
- ✓ गणपत शामशास्त्री ने 1909 में 13 नाटक खोजे थे। जिनमें -स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, दरिद्रचारूदत्त, बालचरित आदि प्रमुख ग्रन्थ है।
- ✓ इसे 720 ई. में चीन में एक दूत मण्डल भेजा था।
- ✓ इसे 'घटीकाओं का पुनरुत्थापक' कहा जाता है।

6. परमेश्वर वर्मन II 728–730 ई.

- ✓ यह सिंहविष्णु के वंश का अंतिम शासक माना जाता है।
- ✓ यह गंग वंश के शासक एरैयाप से निलुण्ड के युद्ध में लड़ते हुए मारा गया।
- ✓ इसको हराने के बाद एरैयाप ने 'नन्दि' की उपाधि धारण की।

7. नन्दीवर्मन II 730–800 ई.

- ✓ यह सिंहविष्णु के भाई भीमवर्मा की 6 ठी पीढ़ी का वंशज था।
- ✓ इसने कांची में मुक्तलेश्वर मन्दिर तथा वैकुण्ठ पेरूमल मन्दिर का निर्माण पूर्ण करवाया।
- ✓ आलवार सन्त तिरुमंगई इसका समकालीन/दरबार में था।

8. दन्तिवर्मन 806–846 ई.

- ✓ यह नन्दीवर्मन का पुत्र था।
- ✓ पल्लव व राष्ट्रकूट संघर्ष इस समय चरम पर था।
- ✓ दन्तिवर्मन की उपाधि महासामन्ताधिराज थी।
- ✓ तमिल लेखों में इसे भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण बताया गया है।

9. नन्दीवर्मन III 846–869 ई.

- ✓ उपाधि - तेल्लारेंदि
- ✓ दरबारी विद्वान पेरून्देवनार ने भारतवेणवा नामक ग्रन्थ लिखा।
- ✓ इसी विद्वान ने नन्दिकलम्बकम काव्य की रचना की।
- ✓ नन्दीवर्मन III के बाद पल्लव शासक नृपतुंग (ई. 869–880 लगभग) बना।

10. अपराजित 881–903

- ✓ चोल शासक आदित्य I ने अपराजित को परास्त
- ✓ करके पल्लव वंश को समाप्त कर दिया।
- ✓ तोडंमण्डलम् क्षेत्र पर चोल सत्ता स्थापित हुई।
- ✓ यह पल्लव वंश का अंतिम शासक था।

पल्लवकालीन संस्कृति

प्रशासन

- ➢ पल्लव शासक के पास सलाह व सहायता के लिए मंत्रीपरिषद थी जिसे अमात्य कहा जाता था।
- ➢ राजा दैवीय राजत्व पर विश्वास करते थे। इन राजाओं ने धर्मराजा,
- ➢ महाराजाधिराज जैसी धार्मिक उपाधियाँ धारण की थी।
- ➢ ग्राम का मुखिया ग्राम भोजक कहलाता था।

- ग्राम सभा की 60 बैठक एक विशाल वृक्ष के नीचे होती थी। इस
- स्थान को 'मन्‍म' कहा जाता था।
- ग्राम दो प्रकार के होते थे- ब्रह्मदेय तथा सामान्य।
- पल्लव काल में प्रान्तों को राष्ट्र/मण्डल कहा जाता था।
- मण्डल/राष्ट्र का प्रधान राष्ट्रीय कहलाता था।
- पल्लवों के नौसेना का केन्द्र महाबलिपुरम तथा नेगापट्टन था।
- इस समय सेना के प्रमुख अंग - पैदल, अश्वारोही, हाथी सेना, नौसेना।
- सेनापति राजा का आदेश मानता था।

पल्लव कला

- पर्सी ब्राउन ने पल्लवकालीन स्मारकों को चार शैलियों में बाँटा है।
- इस काल के स्थापत्य के प्रमुख केन्द्र - महाबलिपुरम व कांचीपुरम थे।
- पल्लव कला ही द्रविड़ कला शैली का आधार मानी जाती है। इसे प्रारम्भ
- करने का श्रेय महेन्द्रवर्मन प्रथम को जाता है।

प्रमुख चार शैलियाँ

1. महेन्द्रवर्मन शैली –610–640 ई.

- ✓ इसका विकास महेन्द्रवर्मन प्रथम के काल में हुआ था।
- ✓ महेन्द्रवर्मन की उपाधि विचित्र चित्र थी।
- ✓ इस शैली की मुख्य विशेषता 'चट्टु मण्डप' थी।
- ✓ इसके अन्तर्गत चट्टान को काटकर गुफा मन्दिर का
- ✓ निर्माण किया गया। इनमें लोहा, चूना, गारा का प्रयोग नहीं होता था।
- ✓ मण्डप के बाहर बने मुख्य द्वार पर द्वारपालों की मूर्तियां मिलती है।
- ✓ **इस शैली के मुख्य मण्डप –**
  1. पल्लवरम् का पंचपाण्डव मण्डप
  2. मण्डगप्पट्टु का त्रिमुर्ति मण्डप
  3. महेन्द्र वाड़ी का महेन्द्रविष्णु गृह मण्डप
  4. भैरव मण्डप
  5. ललितान्कर मण्डप (त्रिचुरापल्लि)
  6. मामण्डूर का विष्णु मण्डप
- ✓ इनमें प्रारम्भिक मण्डप अलंकरणरहित थे।

2. मामल्ल शैली 640–680 ई.

- ✓ इसका आरंभ नरसिंह वर्मन प्रथम के समय हुआ था।
- ✓ इस शैली के अन्तर्गत मण्डप व एकाश्मक मन्दिर/रथ प्रमुख स्मारक बने।
- ✓ इस शैली के मण्डप विकसित अवस्था में थे।
- ✓ मण्डप अत्यन्त अलंकृत थे।
- ✓ स्तम्भों को सिंह के सिर पर स्थापित किया गया है।
- ✓ इस शैली के रथ मन्दिर - यह मन्दिर द्रविड़ कला के स्वरूप के है।
- ✓ चट्टान को काटकर बनाया गया मन्दिर रथ/एकाश्मक मन्दिर कहलाता है। इन्हें सप्तपैगोडा भी कहा जाता है।
- ✓ इनमें पाँच रथों का समूह एक साथ मिला है, जिसे पंचरथ कहा जाता है।

Unleash the topper in you

1. **धर्मराज रथ -**
    - सबसे प्रसिद्ध रथ, यह द्रविड शैली में है।
    - यह सबसे बड़ा रथ है तथा मंजिला है।
    - यह पिरामिड के आकार में है।
    - इसमें नरसिंहवर्मन की मूर्ति स्थापित है।
2. **भीम रथ -**
    - इसकी छत अर्धवेलनाकार है।
    - इसकी शैली बेसर है।
3. **अर्जुन** रथ -
    - शैली - द्रविड़
    - यह पिरामिडनुमा रथ है।
    - नकुल-सहदेव रथ
    - शैली = बेसर शैली
    - इसमें विशाल गज मूर्तियाँ है।
4. **द्रौपदी रथ -**
    - यह नागर शैली में है।
    - यह झोंपड़ीनुमा आकृति में है।
5. **गणेश रथ - शैली बेसर**
    - यह सभी रथों में सबसे सुन्दर रथ है।
6. **पिण्डारी रथ - यह दो रथ है। शैली - द्रविड**
    - इसका निर्माण अधूरा है।
7. **वलैयंकुट्टै रथ -**
    - इसकी शैली - द्रविड
    - इसका नामकरण तालाब के नाम पर पड़ा था।

राजसिंह शैली 680- 800ई.

- इस शैली का **आरंभ पल्लव नरेश नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह)** ने किया।
- इसमें पहली बार **चुनाई पद्धति** को अपनाया गया। मन्दिर निर्माण में **चूना, पत्थर, ईट, लोहा, लकड़ी** का प्रयोग किया गया।
- इस शैली के **मन्दिरों में महाबलिपुरम से तीन मन्दिर** प्राप्त होते हैं –
    1. शोर मन्दिर (तटीय शिव मन्दिर)
    2. ईश्वर मन्दिर
    3. मुकुन्द मन्दिर।
- कांचीपुरम के मन्दिर –
    1. कैलाशनाथ का मन्दिर
    2. वैकुण्ठ पेरूमल का मन्दिर

1. **शोर मन्दिर/तटीय मन्दिर :-**

    ✓ जलाशय मन्दिर महाबलिपुरम में स्थित है।

    ✓ इसका निर्माण नरसिंह वर्मन II ने करवाया था।

    ✓ इसका प्रवेश द्वार पश्चिम की ओर है।

- ✓ गर्भगृह वर्गाकार है जिसके ऊपर अष्टकोणीय शुण्डाकार विमान कई तल्लों वाला है।
- ✓ राजसिंह शैली का पहला मन्दिर यही है।

2. कैलाशनाथ मन्दिर - कांचीपुरम

- ✓ इसका निर्माण नरसिंहवर्मन II के काल में शुरू हुआ व परमेश्वरवर्मन II के काल में पूर्ण हुआ।
- ✓ यह मन्दिर राजसिंह शैली का सर्वोच्च तथा सर्वाधिक अलंकृत है।
- ✓ इस मन्दिर को राजसिंहेस्वर कहा जाता है।
- ✓ यह द्रविड़ शैली में बना हुआ है।
- ✓ इसका गर्भगृह आयताकार है जिसकी प्रत्येक भुजा 9 फीट है।
- ✓ इसमें पिरामिडनुमा विमान तथा स्तम्भयुक्त मण्डप है।
- ✓ गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है।
- ✓ इसका गोपुरम सात शिखर का है।
- ✓ इसका निर्माण ग्रेनाइट व बलुआ पत्थर से हुआ है।

3. वैकुण्ठपेरूमल का मन्दिर - कांचीपुरम

- ✓ इसका निर्माण परमेश्वरवर्मन II के समय में हुआ व इसका निर्माण पूर्ण नन्दिवर्मन द्वितीय ने करवाया।
- ✓ यह भगवान विष्णु का मन्दिर है।
- ✓ इसका विमान चार मंजिला है।
- ✓ आलवार सन्त तिरुमंगई के भक्ति गीत इस मन्दिर पर उत्कीर्ण हैं।

4. नन्दिवर्मन शैली 800–900 ई.

- ✓ यह अन्तिम पल्लव स्थापत्य शैली है।
- ✓ इस शैली के मन्दिर आकार में छोटे थे।
- ✓ इस शैली के प्रमुख मन्दिर -
  1. मुक्तलेश्वर तथा मातंगेश्वर मन्दिर – कांची
  2. गुडिमल्लम् का परशुरामेश्वर मन्दिर
  3. वीरट्टानेश्वर मन्दिर – तिकतेन
  4. कड़मल्लिश्वर का मन्दिर - ओरगड़म्

<u>चोल साम्राज्य</u>

- ➢ 9 वीं शताब्दी में विजयालय के नेतृत्व में चोलों का पुनरुत्थान हुआ।
- ➢ आदित्य I ने पल्लव शासक को पराजित कर, पल्लव क्षेत्र को चोलों के अधीन किया।
- ➢ विजयालय पल्लवों का सामन्त था। यहीं रहते हुए चोल शक्ति में वृद्धि की।
- ➢ विजयालय को चोल वंश का संस्थापक माना जाता है।
- ➢ इसने तंजौर को जीता तथा इसको अपनी राजधानी बनाया।
- ➢ इसने तंजौरकोंडा (तंजौर का विजेता), नरकेशरी की उपाधि ली थी।
- ➢ यहीं तंजौर में दुर्गा देवी का मन्दिर बनवाया था।
- ➢ विजयालय के तंजौर विजय की जानकारी तिरूकोयलूर लेख से मिलती है।

2. आदित्य प्रथम 871–907 ई.

- ✓ यह विजयालय का पुत्र था।
- ✓ यह प्रथम स्वतंत्र चोल शासक था।
- ✓ इसने पल्लवों के राज्य क्षेत्रों को अपने अधीन कर लिया।
- ✓ इसने गजकेशरी, कोदण्ड तथा तोण्डु नाडु की उपाधि धारण की।
- ✓ इसने कावेरी नदी के दोनों किनारों पर शैव मन्दिर बनवाये।

3. परान्तक प्रथम 907–955 ई.

- ✓ यह आदित्य प्रथम का पुत्र था।
- ✓ इसने मदुरा के पाण्ड्य राजा राजसिंह II पर आक्रमण किया।
- ✓ मदुरा पर परान्तक का अधिकार होने के बाद मदुरैकोंड की
- ✓ उपाधि धारण की। (अन्य उपाधि-संग्रामराघव भी)
- ✓ परान्तक प्रथम को उत्तम चोल भी कहा जाता है।
- ✓ इसने हेमगर्भ तथा तुलागर्भ यज्ञ संपादित करवाये।
- ✓ ऋग्वेद के टीकाकार वेंकटमाधव इसके समकालीन थे।
- ✓ 955 ई. में परान्तक की मृत्यु के बाद 30 वर्षों तक अन्धकार
- ✓ युग था। इस दौर में गण्डारादित्य, अरिञ्जय, परान्तक II शासक हुए।
- ✓ परान्तक II को सुन्दर चोल भी कहा जाता है।
- ✓ परान्तक II के बाद उत्तम चोल शासक बना। यह पहला चोल शासक
- ✓ था जिसने सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलाये।

4. राजराज प्रथम 985–1015 ई.

- ✓ यह सुन्दरचोल का पुत्र था।
- ✓ इसका मूलनाम अरिमोलिवर्मन था।
- ✓ उपाधि - राजराज
- ✓ इसका प्रथम अभियान केरल, पाण्ड्य तथा सिंहल राज्य पर किया।
- ✓ इसने केरल के शासक रविबर्मा को पराजित कर काण्डालूर शालेकलमत्
- ✓ की उपाधि धारण की।
- ✓ पाण्ड्य राज्य के राजा अमरभुजंग को हराकर जयगोंड की उपाधि ली।
- ✓ श्रीलंका/सिंहल शासक महेन्द्र V को इसने पराजित किया तथा उत्तरी
- ✓ सिंहल पर अधिकार कर लिया।
- ✓ चोलों ने अपनी राजधानी चोलेंन्कलम् कांची तथा इसका नाम बदलकर
- ✓ 'जयनाथ मंगलम्' रख दिया।
- ✓ गंग प्रदेश के विजय के उपलक्ष्य में इसने चोलमार्तण्ड की उपाधि धारण की।
- ✓ इसने कल्याणी के चालुक्य तथा वेंगी के चालुक्यों के विरुद्ध अभियान किया।
- ✓ इसने वेंगी को अपना संरक्षित राज्य घोषित किया।
- ✓ राजराज प्रथम ने एक दूत मण्डल चीन भेजा था।
- ✓ इसने तंजौर में राजराजेश्वर मन्दिर (शिव मन्दिर) तथा बृहदेश्वर मन्दिर बनवाया।

Toppersnotes Unleash the topper in you

- ✓ दक्षिण भारत में सर्वप्रथम खड़ी आकृति वाले सिक्के राजराज प्रथम ने जारी किये।
- ✓ राजराज ने चोल मार्तण्ड, जयगोण्ड, मुम्मडिचोल देव आदि उपाधियाँ धारण की।
- ✓ राजराज प्रथम ने अंतिम समय में मालदीव को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया।
- ✓ इसने कलिंग विजय के बाद वेंगिकोंडा की उपाधि धारण की।
- ✓ कम्बोडिया के शासक ने एक स्वर्ण रथ राजराज को भेंट किया।
- ✓ राजराज प्रथम के जीवन का अंतिम अभियान मालदीव पर था।

5. राजेन्द्र प्रथम 1014−1044 ई.

- ✓ नीलकण्ठ शास्त्री ने इसकी तुलना सिकन्दर से की।
- ✓ स्मिथ ने राजेन्द्र प्रथम को दक्षिण का नेपोलियन कहा था।
- ✓ Note - स्मिथ ने समुद्रगुप्त (गुप्त शासक) को भारत का नेपोलियन कहा।
- ✓ इसने सर्वप्रथम केरल व पाण्ड्य राज्य को विजित किया।
- ✓ इस विजय के बाद इसने अपने पुत्र चोलपाण्ड्य की उपाधि देकर
- ✓ मदुरै का शासक बनाया।
- ✓ राजेन्द्र प्रथम पहला चोल शासक था जिसने सम्पूर्ण श्रीलंका को जीता।

गंगा घाटी अभियान :

- ✓ इसने अपने पुत्र विक्रम चोल व सेनापति छुड़वाय के
- ✓ नेतृत्व में उत्तरी अभियान भारत अभियान किया।
- ✓ इस अभियान की जानकारी तिरुवालंगाडु ताम्रपत्र में मिलती है।
- ✓ इस अभियान के तहत पाल शासक महिपाल को हराया।
- ✓ बाद में बंगाल व कौशल को अपने अधिकार में ले लिया।
- ✓ गंगा घाटी जीतने वाला प्रथम चोल शासक राजेन्द्र प्रथम था।
- ✓ इस विजय के उपलक्ष्य में गंगैकोंडचोल की उपाधि धारण की।
- ✓ त्रिचनापल्ली के पास इसने गंगैकोंडचोलपुरम नामक नगर बसाया।
- ✓ यहीं राजधानी क्षेत्र के पास चोलगंगम नामक तालाब बनवाया।

दक्षिण पूर्व एशिया की विजय :

- ✓ इस क्षेत्र में जावा, मलेशिया तथा सुमात्रा का अभियान किया।
- ✓ इस समय यहाँ श्रीविजय (शैलेन्द्र वंश) का शासन था।
- ✓ यहाँ का शासक विजयोत्तुंगवर्मन था।
- ✓ राजेन्द्र प्रथम ने इसे पराजित कर अपना सामन्त बना लिया।
- ✓ चोल सेना ने कड़ारम् व श्रीविजय को जीत लिया। इसके बाद
- ✓ राजेन्द्र प्रथम ने कडारम्कोंडा की उपाधि धारण की।
- ✓ इस अभियान की जानकारी तिरुवालंगाडु ताम्रपत्र लेख से मिलती है।
- ✓ इसी अभियान के समय इसने अण्डमान, निकोबार, अरकान आदि द्वीपों को जीता।
- ✓ राजेन्द्र प्रथम ने अपनी राजधानी गंगैकोंडचोलपुरम् को बनाया था।
- ✓ राजेन्द्र प्रथम ने मुम्मडिचोल तथा पण्डितचोल की उपाधियाँ धारण की।
- ✓ इसके समय बंगाल की खाड़ी चोलों की झील कहलाती थी।

6. **राजाधिराज प्रथम 1044–1052 ई.**

- ✓ यह श्रीलंका-पाण्ड्य-केरल राज्यों के गठबंधन को तोड़ने में सफल रहा।
- ✓ राजाधिराज प्रथम ने अश्वमेध यज्ञ भी करवाया था।
- ✓ 1052 ई. में कोप्पम के युद्ध में चालुक्य शासक सोमेश्वर से लड़ता हुआ राजाधिराज प्रथम मारा गया।
- ✓ राजाधिराज प्रथम ने 'विजय राजेन्द्र' की उपाधि धारण की।
- ✓ यह हाथी की पीठ पर मृत्यु प्राप्त करने वाला चोल शासक था।

7. **राजेन्द्र II 1052–1064 ई.**

- ✓ इसने चालुक्य शासक सोमेश्वर (कल्याणी के चालुक्य) को पराजित किया।
- ✓ सोमेश्वर के हारने के बाद युद्ध समाप्त हुआ कर ली (1052 ई.)।
- ✓ राजेन्द्र II ने परकेसरी की उपाधि धारण की।

8. **वीर राजेन्द्र 1064–70 ई.**

- ✓ यह चोल वंश परम्परा का अंतिम महत्त्वपूर्ण शासक था।
- ✓ चालुक्य शासक सोमेश्वर प्रथम को हराकर उसके बाद तुंगभद्रा के तट पर एक विजय स्तंभ बनवाया।
- ✓ इसके बाद सोमेश्वर प्रथम ने जल हत्या कर ली।
- ✓ वीर राजेन्द्र के बाद अधिराजेन्द्र शासक बना (चोल वंश परम्परा का अन्तिम शासक)
- ✓ 1070 ई. में हुए भीड़ में अधिराजेन्द्र की हत्या कर दी।

9. **कुलोतुंग प्रथम 1070–1120 ई.**

- ✓ वेंगी का चालुक्य वंश A राजेन्द्र II का नाती/पुत्र था।
- ✓ यही कुलोतुंग प्रथम के नाम से जाना जाता है।
- ✓ यह पूर्वी वेंगी के चालुक्य शासक राजराज का पुत्र था।
- ✓ सभी चोल शासकों में सबसे लम्बा शासनकाल कुलोतुंग प्रथम का था।
- ✓ 1077 ई. में 72 व्यापारियों का दूत/शिष्टमण्डल चीन भेजा था।
- ✓ इसने कई सारे करों को हटाया, जिसके कारण इसे 'शुंगमत्तवित्चोल' कहा जाता है। (करों को हटाने वाला)
- ✓ कुलोतुंग की अन्य उपाधियाँ - त्रिकालचक्रवर्ती, इसने कैरेकोडचोल तथा मलेनाडुकोंडचोल की उपाधि धारण की। (अन्य उपाधि - त्रिभुवनचक्रवर्तिन)
- ✓ इसके समय आदियरकुनल्लूर ने शिल्पपादिकारम पर टीका लिखी।
- ✓ वैष्णव दार्शनिक रामानुज को कुलोतुंग के आचरण के कारण श्रीरंगम् छोड़कर मैसूर जाना पड़ा।
- ✓ रामानुज ने होयसल शासक विष्णुवर्द्धन के पास शरण ली।

10. **विक्रम चोल 1120–1133 ई.**

- ✓ इसने त्याग समुद्र की उपाधि धारण की। (अन्य उपाधि - अकलंक)
- ✓ इसने चिदम्बरम के नटराज मन्दिर का पुनर्निर्माण करवाया।

11. **कुलोतुंग II 1133–1150 ई.**

- ✓ यह कट्टर शैव था।
- ✓ इसने गोविन्दराज की प्राचीन विष्णु मूर्ति को समुद्रा में फिंकवा दिया था।
- ✓ बाद में इस मूर्ति को रामानुज ने वापस निकलवा कर तिरुपति में स्थापित करवाया।
- ✓ रामानुज ने इसे बाद में वापस चिदम्बरम के नटराज मन्दिर में पुनः स्थापित करवाया।
- ✓ कुलोतुंग II के पश्चात् (1150–1173) राजराज II तथा बाद में राजाधिराज II (1173–1178) शासक बने।

12. कुलोतुंग तृतीय 1182−1216 ई.

- ✓ इसने मदुरै में एक विजयस्तंभ बनवाया।
- ✓ इसके दरबार में कम्बन नामक विद्वान रहता था। कम्बन ने तमिल रामायण की रचना की थी।
- ✓ कुलोतुंग III के बाद राजराज तृतीय शासक बना।

13. राजेन्द्र III 1250−1279 ई.

- ✓ यह अंतिम चोल शासक था।
- ✓ इसके बाद चोल राज्य पाण्ड्यों के अधीन हो गया।

चोल प्रशासन

1. सम्राट

- ✓ राजा के मौलिक आदेश तिरुक्कोशवोले कह लाते थे।
- ✓ राजा के व्यक्तिगत अंगरक्षकों को वेदैक्कार कहा जाता था।
- ✓ राजा अपना राज्याभिषेक तंजौर, गंगैकोण्डचोलपुरम्, चिदम्बरम् आदि स्थानों पर करते थे।
- ✓ चोल शासक प्रायः शैव धर्मानुवलंबी थे।
- ✓ राजाओं के भोजनालय तथा स्नानाघर का प्रबंध स्त्रियाँ देखती थी।
- ✓ राजा द्वारा स्थानीय संस्थाओं को दिये गये आदेश श्रीमुख कहा जाता था।
- ✓ राज्य के उच्च अधिकारियों को उडनकुट्टम कहा जाता था। (निजी सहायक)
- ✓ चोल अधिकारियों की दो श्रेणियाँ थी
  1. पेरुन्दिरम - उच्च श्रेणी के अधिकारी
  2. शिरुन्दिरम - निम्न श्रेणी के अधिकारी अधिकारियों के पद आनुवांशिक थे। वेतन के रूप में भूमि प्रदान की जाती थी। वेतन में दी गई भूमि को जीवित कहा जाता था।

2. प्रान्तीय प्रशासन

- ✓ प्रान्तों को **मण्डलम्** कहा जाता था।
- ✓ राजराज प्रथम के काल में प्रान्तों की संख्या 8 थी।
- ✓ प्रान्तपति को **वायसराय** कहा जाता था।
- ✓ इस पद पर प्रायः **राजकुमारों** को ही नियुक्ति की जाती थी।
- ✓ प्रान्त का विभाजन कई **कोट्टम/वलनाडु** में हुआ।
- ✓ प्रत्येक कोट्टम में कई **जिले** थे। जिलों को **नाडु** कहा जाता था।
- ✓ नाडु की सभा को **नाडार** कहा जाता था। (प्रशासन का संचालन)
- ✓ नाडु के अन्तर्गत अनेक ग्राम संघ थे; जिन्हें **'कुर्रम'** कहा जाता था।
- ✓ बड़े कुर्रम को **तंकुर्रम/तणियूर** कहा जाता था।
- ✓ प्रशासन की सबसे छोटी इकाई **ग्राम** होती है।
- ✓ **चोलकालीन प्रशासन की इकाई का क्रम**